बहादुर नन्हा तोता

जातक कथा

बहादुर नन्हा तोता

जातक कथा
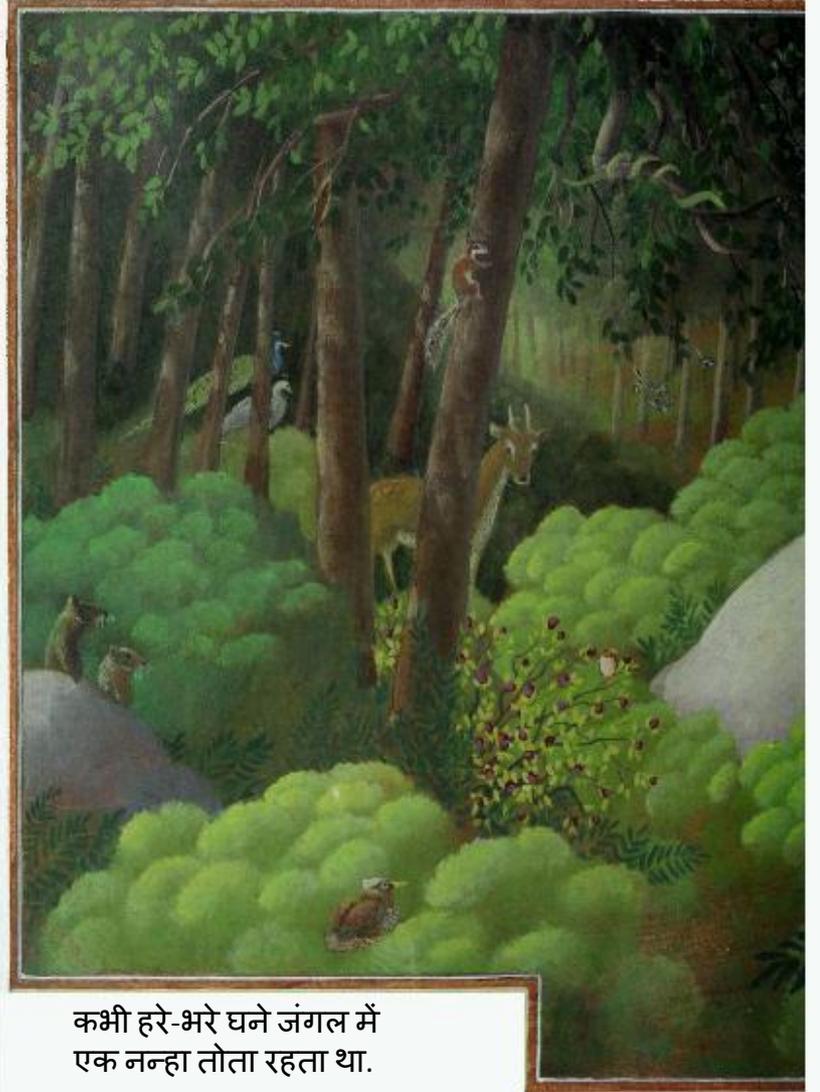
कभी हरे-भरे घने जंगल में
एक नन्हा तोता रहता था.
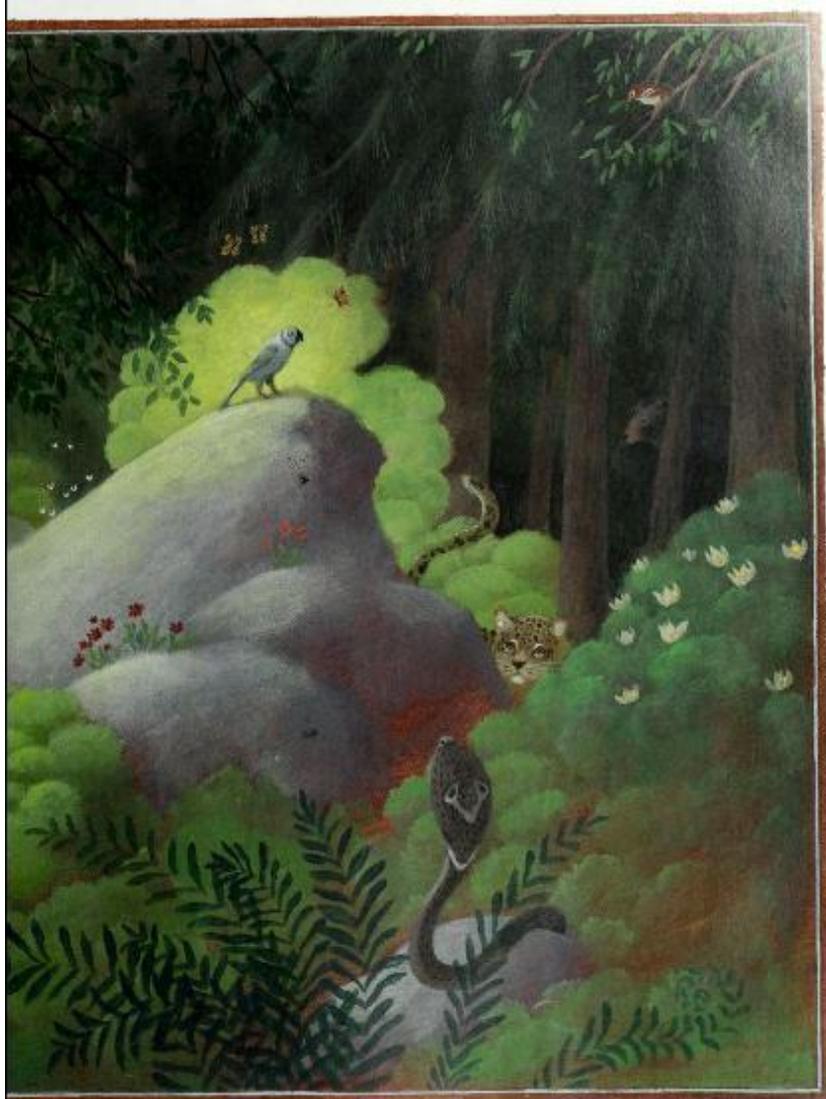
एक दिन आसमान में काले घने बादल छा गए.
चकाचौंध बिजली चमकी, और ज़ोर से बादल
गरजे. आसमान की बिजली एक सूखे, मरे पेड़ से
जाकर टकराई. पेड़ धू-धू करके जलने लगा.
तेज़ हवा से पूरे जंगल में आग फ़ैल गई.

"आग!" धुंआ सूंघकर नन्हा तोता चिल्लाया. "आग लगी है! दौड़ो! दौड़ो नदी की ओर!" फिर अपने पंख फड़फड़ाता हुआ नन्हा तोता सुरक्षा के लिए नदी की ओर उड़ा. किसी अन्य चिड़िया जैसे वो भी उड़ सकता था.
जब वो जंगल के ऊपर उड़ा तब उसे आसमान में आग की लपटें उठती दिखाई दीं. जंगल के सैकड़ों साल पुराने घने पेड़ अब धू-धू करके जल रहे थे. बहुत से जानवर उस आग में फंस गए थे. भागने और बचने का उनके पास कोई रास्ता नहीं बचा था. अचानक तोते को फंसे जानवरों को बचाने की एक तरकीब समझ में आई.

नन्हा तोता नदी की ओर उड़ा. नदी के पास सुरक्षा के लिए पहले से ही कई जानवर जमा हो चुके थे.
"हाथी, कृपाकर अपनी सूंड में पानी भरो और उसे लपटों पर बरसाओ! हम में से बाकी जानवर भी अपने शरीर को नदी में भिगा सकते हैं. हम पत्तों के दोनों में पानी भर-भर करके ला सकते हैं. चलो! हम सब मिलकर अपने जंगल और मित्रों को बचाएं!"
पर तट पर जमा हुए जानवरों ने निराश होकर कहा :
"नन्हें तोते, अब कोई कुछ नहीं कर सकता. अब बहुत देर हो चुकी है."
"यह सच है," चीते ने कहा. "वैसे मैं बहुत तेज़ दौड़ता हूँ, पर आग की लपटे मुझ से भी तेज़ दौड़ती हैं."
"और चाहें हम कितने भी ताकतवर क्यों न हों," हाथी ज़ोर से दहाड़ा, "फिर भी हम उन खूंखार लपटों से नहीं लड़ सकते हैं."
"स्थिति बड़ी निराशाजनक हैं," सभी जानवरों ने कहा.
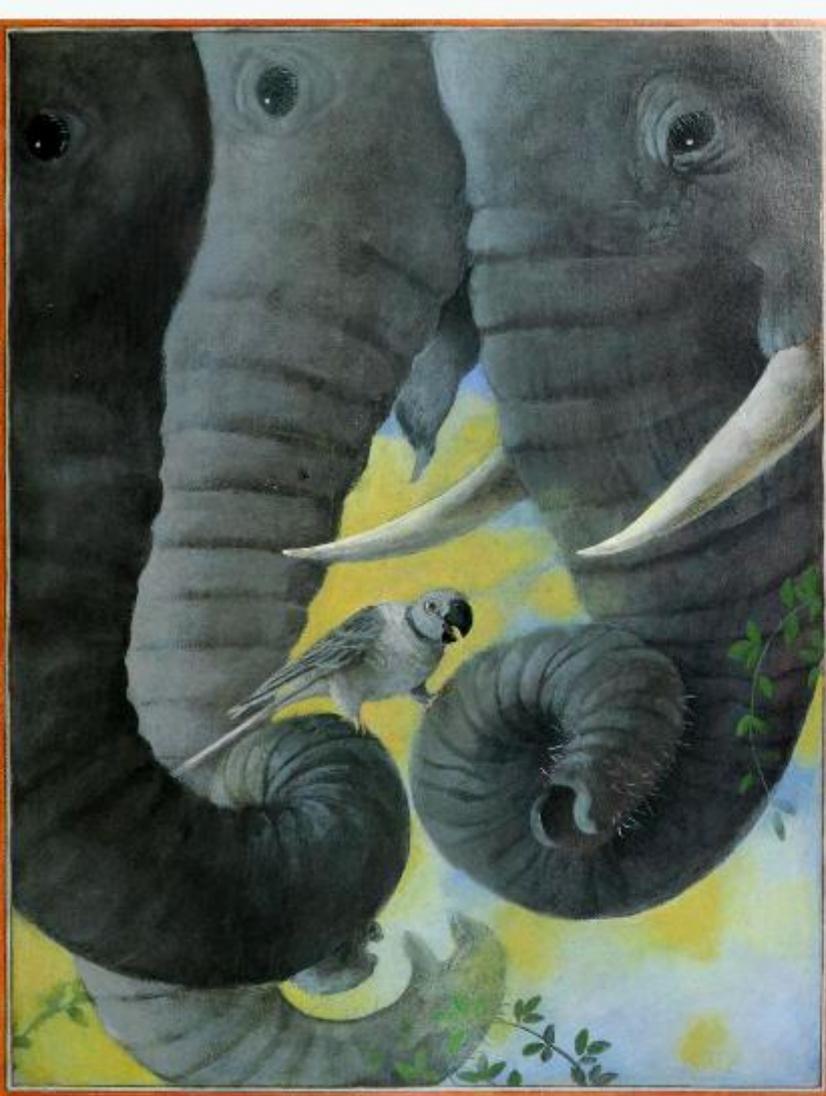
पर उस नन्हें तोते को आशा की एक किरण नज़र आई. उसने उम्मीद नहीं छोड़ी. उसने अपने छोटे पंखों को पानी में डुबोया और फिर वो अपनी चोंच में पानी भरकर जलते जंगल के ऊपर उड़ा.

आग की लपटें, नन्हे तोते की ओर लपकीं. लपटें बेहद गर्म थीं और उनसे गहरा काला धुंआ ऊपर उठ रहा था. कभी लपट इधर से उठती, कभी उधर से. पर आग के दरिया में से बचता हुआ, नन्हा तोता बहादुरी से जलते जंगल के ऊपर उड़ा.

फिर जंगल के बींचोबीच जहाँ सबसे तेज़ आग धधक रही थी वहां जाकर नन्हे तोते ने अपने पंख फड़फड़ाए. उसके पंखों से पानी की जो भी बूंदे चिपकी थीं वे चमकते मोतियों जैसे आग की लपटों पर जाकर गिरीं. उसने पत्ते के दोने का भी पानी लौटा. पानी की बूँदें हिस्स! की आवाज़ करके लुप्त हो गईं!
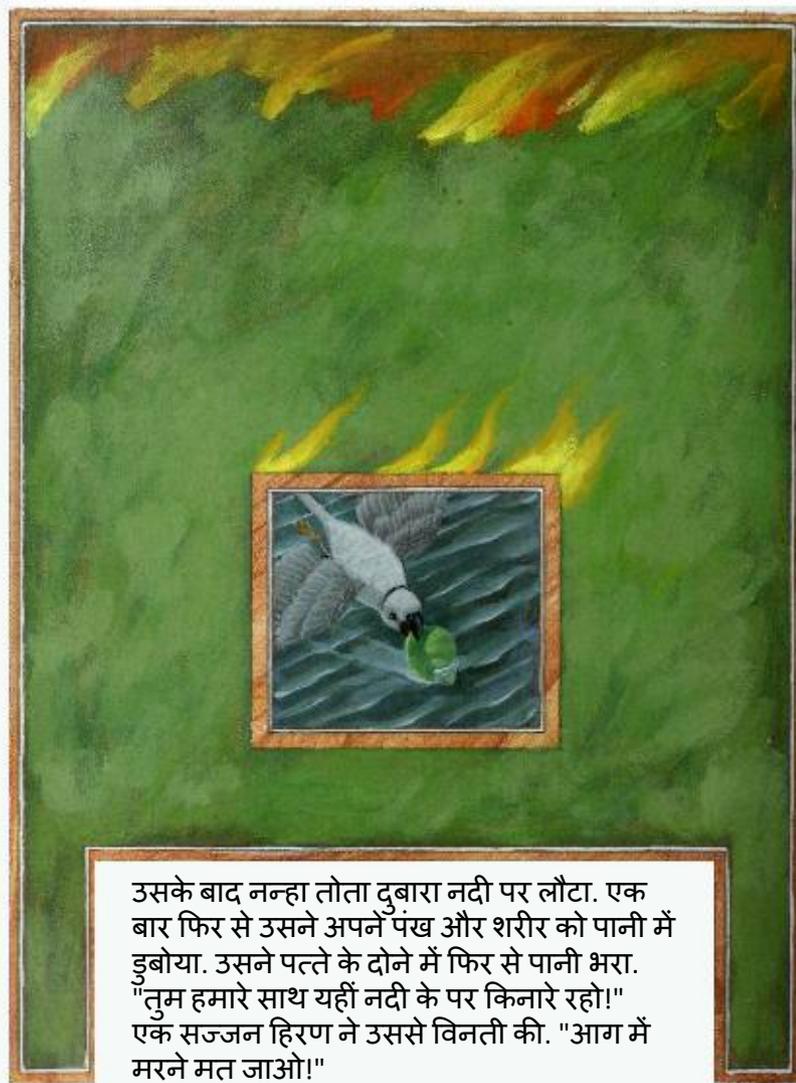
उसके बाद नन्हा तोता दुबारा नदी पर लौटा. एक बार फिर से उसने अपने पंख और शरीर को पानी में डुबोया. उसने पत्ते के दोने में फिर से पानी भरा. "तुम हमारे साथ यहीं नदी के पर किनारे रहो!" एक सज्जन हिरण ने उससे विनती की. "आग में मरने मत जाओ!"
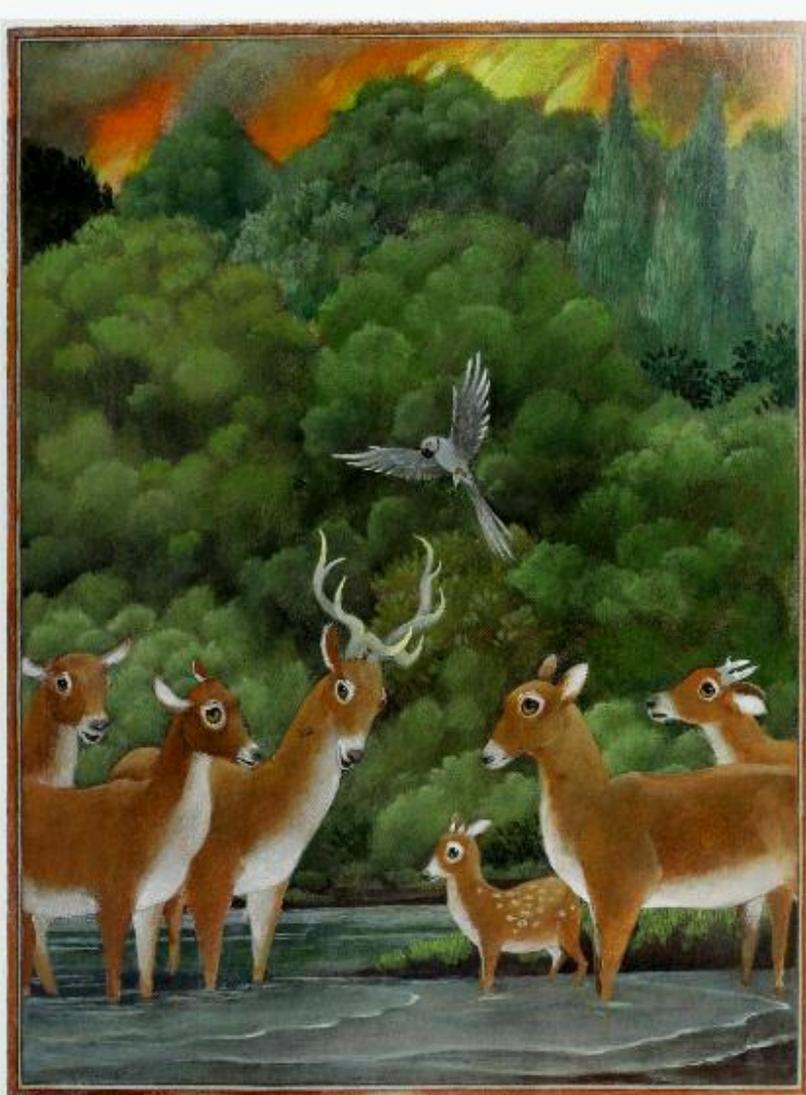
"बिल्कुल ठीक!" शक्तिशाली बाघ ने कहा. "धू-धू करते जंगल को, पानी की कुछ बूंदे नहीं बचा सकती हैं!" "अब बहुत देर हो चुकी है!" बाकी जानवर भी चिल्लाए. "नन्हें तौते तुम हमारे साथ यहीं पर सुरक्षित रहो!" "क्या पता, हमारी कोशिश कामयाब हो जाए," नन्हें तोते ने हांफते हुए कहा. "मैं अपने कोशिश ज़ारी रखूंगा." एक बार फिर से नन्हा तोता जलते जंगल के ऊपर उड़ा और उसने आग पर अपने पंख फड़फड़ाये और दोने का पानी भी नीचे गिराया. दुबारा हिस्स! की आवाज़ आई. इस तरह आगे-पीछे, आगे-पीछे, नन्हा तोता लगातार नदी और जलते जंगल के बीच उड़ता रहा. अब उसकी आँखें अंगारों जैसे जल रही थीं. उसके पंजे जल गए थे. धुएं की वजह से नन्हा तोता लगातार खांस रहा था. पर इस सबके बावजूद वो बिना रुके आग बुझाने का काम करता रहा.
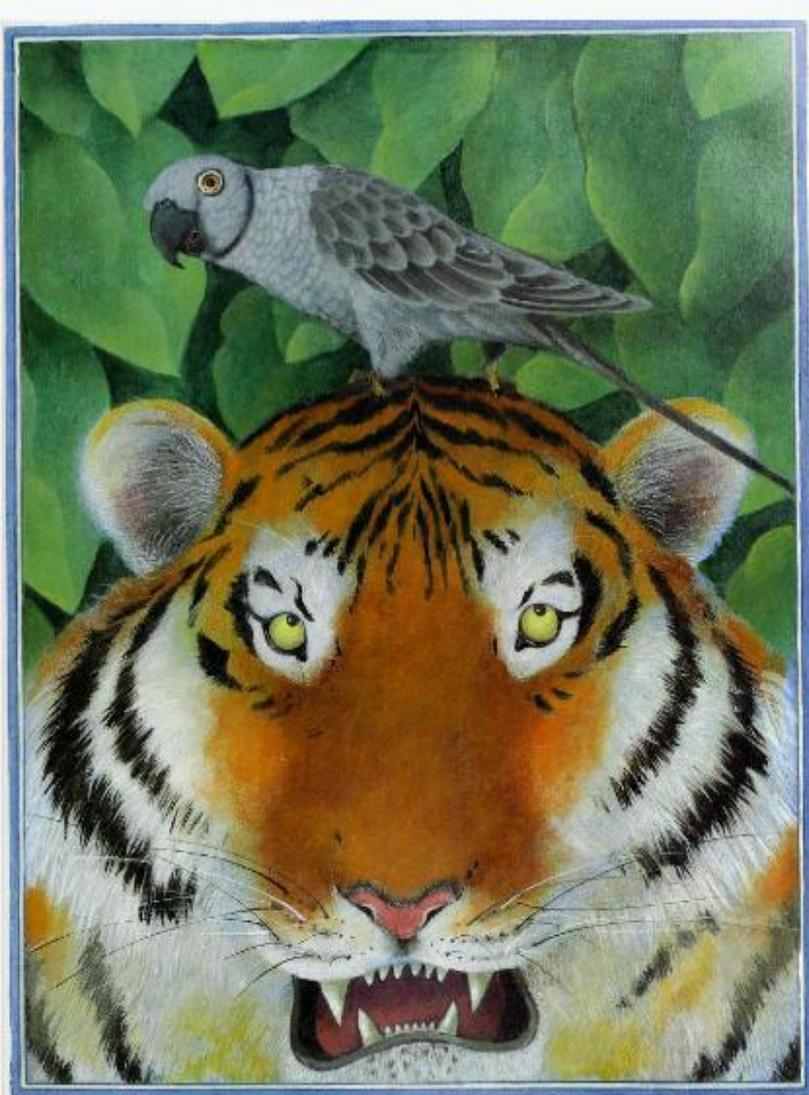
उसी समय कुछ देवी-देवता आसमान में घूम रहे थे. वे हंस रहे थे और बादलों के ऊपर अपने महल में गप्पे लगा रहे थे. वे अच्छा भोजन खा रहे थे और बढ़िया मदिरा पी रहे थे. उनमें से एक देवता ने नन्हें तोते को नीचे उड़ते हुए देखा. "देखो!" वो चिल्लाया. "ज़रा देखो उस बदअक्ल तोते को. वो चंद पानी की बूंदों से जंगल की आग बुझा रहा है!"
"यह तो अच्छा मज़ाक है!" दूसरे देवता ने कहा.
"असंभव!" तीसरा देवता हंसा.
"वो इतना तक नहीं समझता कि वो कभी सफल नहीं होगा!" पहला देवता चिल्लाया.
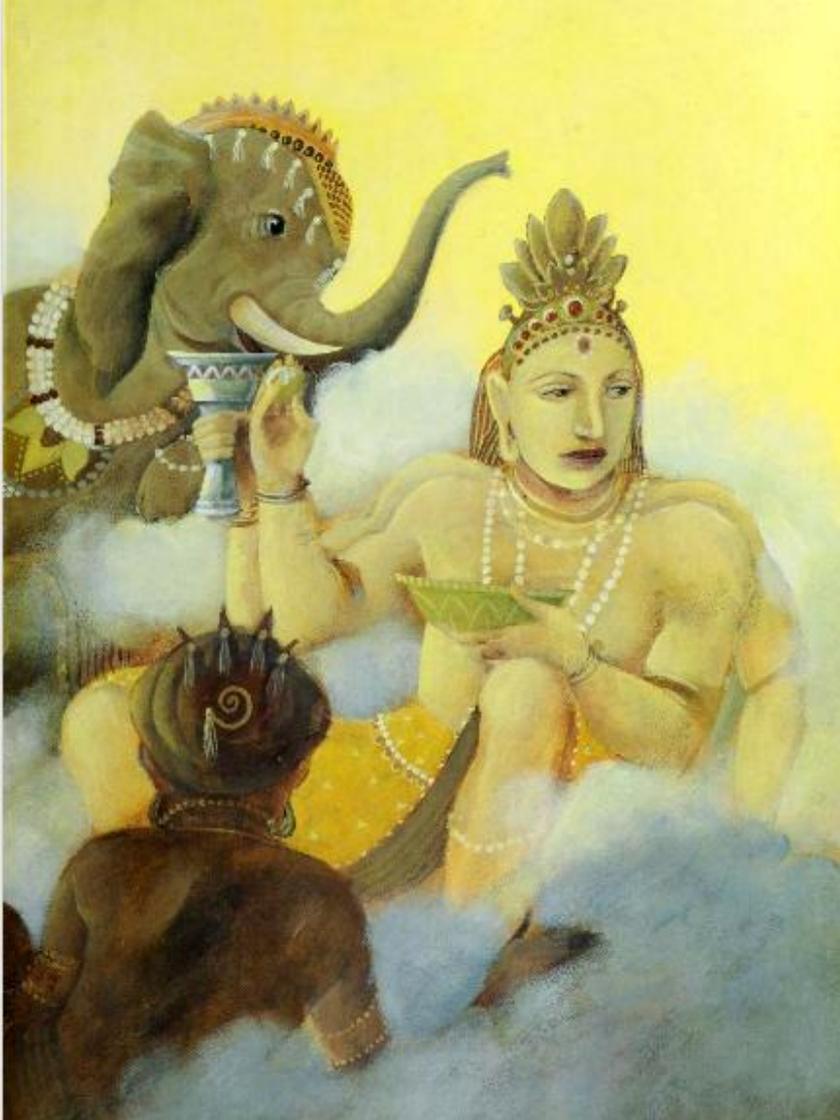
उसके बाद पहले देवता ने अपना सोने का थाल और चांदी की कटोरी अलग रखी. उस देवता ने एक सुनहरी चील का रूप धारण किया. फिर वो अपने विशाल पंखों को फड़फड़ाता हुआ नन्हें तोते के पास गया.

जब नन्हा तोता जंगल की आग के ऊपर उड़ा तब सुनहरी चील उसके पास गई. "छोटी चिड़िया, वापिस जाओ!" चील ने अपनी राजसी आवाज़ में कहा. "पानी की दो-चार बूंदों से यह जंगल की प्रचंड आग नहीं बुझेगी! अगर खुद ज़िंदा रहना चाहती हो तो अभी रुको - नहीं तो बहुत देर हो जाएगी."

पर नन्हें तोते ने सुनहरी चील की सलाह बिल्कुल अनसुनी की. "महान चील!," उसने अपनी धीमी आवाज़ में कहा, "मेरे पास अभी वक्त नहीं है. मुझे अभी तुम्हारी सलाह की ज़रुरत भी नहीं है. मुझे बस तुम्हारी मदद की ज़रुरत है!" यह कहकर नन्हा तोता दुबारा अपने काम में लग गया. सुनहरी चील को यह देखकर बेहद ताज़्ज़ुब हुआ. हर पल लपटें गर्म और भीषण होती जा रही थीं. फिर सुनहरी चील अपने पंख फड़फड़ाकर ऊपर ठंडी हवा में आई.

सुनहरी चील को वो तोता अभी भी उड़ता हुआ दिख रहा था. बाकी देवी-देवता अभी भी हंसने, खाने-पीने और बातचीत में व्यस्त थे, जबकि नीचे जंगल में आग धधक रही थी. अपनी ज़िंदगी में पहली बार पहले देवता को खुद पर शर्म महसूस हुई.
"आख़िरकार, हम देवी-देवता भगवान हैं!"
वो चिल्लाया. "हमें कुछ तो करना चाहिए."
उसके बाद अचानक वो सुनहरी चील ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी. उसकी आँखों से आंसूओं की अविरल धारा बहने लगी. उसके आंसू - तेज़ बारिश के ठंडे पानी जैसे जंगल की आग, जानवरों और नन्हें तोते पर पड़ने लगे.

फिर क्या हुआ? जहाँ भी सुनहरी चील के आंसू गिरे, वहां-वहां आग बुझने लगी! जलती शाखों से पानी की बूँदें मोतियों जैसी चमकने लगीं. सुलगती ज़मीन की प्यास बुझी. जहाँ-जहाँ वो आंसू गिरे, वहां-वहां फिर से हरियाली और जीवन उपजने लगा! ज़मीन पर गर्म अंगारों में से हरी घास की कोपलें फूटने लगीं. पत्तियां लहलहाने लगीं और रंग-बिरंगे फूल खिलने लगे.

नन्हें तोते के शरीर पर नए पंख उग आये. उसके पंखों का रंग लपटों जैसे लाल, पत्तियों जैसा हरा, सूरज की किरणों जैसा पीला और नदी के पानी जैसा नीला हो गया! उसके रंग कितने मनमोहक थे! नन्हा तोता कितना सुन्दर लग रहा था!
"आग अब बुझ गई है," नन्हा तोता खुशी से चिल्लाया. "देखो! खतरा टल गया!"
सारे जानवर एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे. आंसुओं से भीगकर उनकी तबियत दुरुस्त हो गई थी. किसी भी जानवर को चोट कोई नहीं पहुंची थी.
"ज़िंदाबाद!" सभी जानवर मिलकर चिल्लाये.
"ज़िंदाबाद नन्हें तोते और जादुई बारिश!"

अब नीले आकाश में नन्हा तोता अपने मित्रों के साथ ख़ुशी से उड़ रहा था. उससे जो कुछ बना वो उसने किया, और उससे जंगल और जानवर दोनों बच गए.

समाप्त